विद्या भवन, बालिका विद्यापीठ, लखीसराय

वर्ग सप्तम्

विषय- हिंदी

अध्ययन सामग्री

महामंत्री : (दबी जुबान से) हुजूर! मैं आपकी मनः स्थिति को खूब समझ रहा हूँ..... पर हम इनकी करने की स्थिति में नहीं हैं।

टीपू : (उत्तेजित होकर) हम उन्हें लिखकर देने को तैयार हैं, फिर भी उन्हें भरोसा नहीं, हमसे जमानत माँग रहे हैं..... हमसे हमारे जिगर के टुकड़े माँग रहे हैं। (स्वर आर्द्र हो जाता है मुँह छिपाकर आसन पर बैठ जाते हैं)

महामंत्री : (टीपू को गौर से देखकर) हुजूर, मेरे मस्तिष्क में एक युक्ति आ रही है।

टीपू : क्या कहना चाहते हैं आप?

महामंत्री : दो अन्य लड़कों को सिखा-पढ़ाकर और राजसी वेश पहनाकर भेज देंगे हम।

टीपू : और वे धोखा खा जाएँगे? (उत्तेजना से) यह नहीं हो सकता। मैं पिता हूँ। जिस प्रकार मैं अपने पुत्रों पर जान छिड़कता हूँ, उसी प्रकार हर पिता को अपने पुत्रों से प्यार होगा। जैसे मेरे बेटे, वैसे सबके बेटे। मैं किसी के बच्चों के प्राण संकट में नहीं डालना चाहता।

महामंत्री : आपके शाहजादों और प्रजा के बच्चों में बहुत फर्क है हुजूर। शाहजादों के कंधों पर मैसूर की सल्तनत का भार है। कल उन्हें राज्य सँभालना है..... साधारण लड़के क्या ये काम कर सकेंगे?

टीपू : परंतु.....

महामंत्री : शाहजादों की रक्षा करना अपने राष्ट्र की रक्षा करना है।

टीपू : कुछ भी हो। हमारा दिल नहीं मानता कि हम अपने बच्चों के लिए दूसरे के बच्चों की बलि दें।

महामंत्री : प्रजा राजा पर बलिदान होने के लिए ही होती है। आज युद्धों के परिणामस्वरूप जो जन-हानि हो रही है उसे दो लड़कों की बलि देकर रोका जा सके, तो अनुपयुक्त न होगा।

टीपू : (कुछ कमजोर पड़कर) पर यह कोई अच्छी बात न होगी। हम कभी इसकी इजाजत न देंगे।

महामंत्री : अच्छे-बुरे को छोड़िए। आज की परिस्थिति में यही एक मार्ग शेष रह जाता है।

टीपू : (नर्म पड़कर) पर जानते-बुझते हुए कौन हमें अपने जिगर के टुकड़े दे देगा!

महामंत्री : यह आप मुझ पर छोड़ दें। आपके वफादारों की कमी नहीं है। राज्य में सैकड़ों ऐसे व्यक्ति होंगे जो आपके पसीने की जगह खून बहाने को तैयार हो जाएँगे। आप एक बार कहकर देखें।

टीपू : (असमंजस की स्थिति में) मेरी समझ में नहीं आता.....।

महामंत्री : (चलने को तत्पर होते हुए) मुझे आज्ञा दीजिए और निश्चिंत हो जाइए। मैं जन कार्नवालिस को भेजने के लिए उत्तर तैयार करता हूँ । सवेरे दूत के साथ मैसू शाहजादे और मैसूर के राजा का उत्तर भेज दिया जाएगा।

(महामंत्री जाते हैं। चिंतामग्न टीपू टहलने लगते हैं)

पू : (स्वतः) जाने क्यों हमारा फौलाद का मन मोम-सा पिघला जा रहा है। औलाद के म इसे कमजोर बना दिया है? या हमारे निर्णय ने इसे शिथिल कर दिया है.....

हमने ठीक नहीं किया.....

(सहसा 10 और 8 वर्षीय दोनों शाहजादे दौड़ते हुए आकर टीपू के दोनों ओर लटक जाते हैं।)

टीपू : (दोनों शाहजादों को भावविभोर होकर भींचते हुए) आप! टीपू की जान..... मेरे बच्चों..... ..... मैं इस समय शिद्दत से तुम्हारी जरूरत महसूस कर रहा था।

बड़ा शाहजादा : आपने याद किया और हम पहुँच गये बाबाजान।

छोटा शाहजादा : बाबाजान, क्या हकीकत में आप वही करेंगे जिसका सुझाव आपको वजीरे-आजम ने दिया है?

टीपू : (धड़कते दिल से) क्या समझते हैं आप? क्या करेंगे हम?

बड़ा शाहजादा : बाबाजान, क्या यह सच है कि अँग्रेजी हुकूमत ने हमें आप से बतौर जमानत माँगा है?

टीपू : (सिर झुकाकर) हाँ, सच है।

बड़ा शाहजादा : तो आप हमें भेज दें।

छोटा शाहजादा : हाँ, हमें भेज दें।

टीपू : (दोनों को छाती से लगाकर) काश! तुम समझ सकते कि अपने जिगर के टुकड़ों को अपने से दूर करना कितना मुश्किल है!

बड़ा शाहजादा : मगर वे भी तो किसी के जिगर के टुकड़े होंगे जिन्हें आप हमारी जगह भेजना चाहते हैं?

टीपू : (चौंककर) आपसे किसने कहा?

बड़ा शाहजादा : हम आपके पास आ रहे थे। इत्तेफाक से हमने आप लोगों की बातचीत का कुछ हिस्सा सुन लिया।

छोटा शाहजादा : आप हमें वहाँ भेज दें बाबाजान।

बड़ा शाहजादा : आपकी प्रजा आपसे प्यार करती है, आप पर जान छिड़कती है बाबाजान..... क्या उनकी वफादारी का यही सिला होगा कि.....

टीपू : (बड़े शाहजादे के मुँह पर हाथ रखकर) नहीं..... बच्चों नहीं..... मैं पिता हूँ...., किसी पिता पर अन्याय नहीं करूँगा।

दोनों शाहजादे : हमें अँग्रेजों के पास भेज दें..... फिर अपनी ताकत बढ़ाएँ, जब सेना तैयार हो जाए तो हमला करके हमें छुड़ा लाएँ।

टीपू : वे तुम दोनों को बतौर जमानत माँग रहे हैं। अगर हम हमला करेंगे तो वे तुम्हें... खुदा न करे..... (दोनों हाथों से मुँह छिपा लेते हैं)

बड़ा शाहजादा : तो क्या आप हमारे मोह के कारण अपने फर्ज को भुला देंगे? नहीं बाबाजान! ऐसा हरगिज न कीजिए। अपनी औलाद के प्रति आपका मोह आपकी देशभक्ति पर प्र चिह्न लगा देगा।